National Journal of Multidisciplinary Research and Development
ISSN: 2455-9040; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 10-08-2019; Accepted: 11-09-2019
www.nationaljournals.com
Volume 4; Issue 4; October 2019; Page No. 29-31

प्रत्येक पुस्तक को उसका प्रेमी मिले

जगन्नाथ प्रसाद
पुस्तकालयाध्यक्ष, डी0 ए0 वी0 पब्लिक स्कूल, सुर विहार कॉलोनी पिपरवार एरिया, बचरा, चतरा, झारखंड, भारत

सारांश
पुस्तकालय विज्ञान में यह तर्क इस बात पर बल देता है कि प्रत्येक पुस्तक को पढने वाला पाठक मिलना चाहिए लेकिन यह जरूरी नही है कि प्रत्येक पुस्तक पाठक को पसंद आ जाए और वह उसे पढ़ ले। पाठक वही पुस्तक को रूचि और तल्लीनता के साथ पढेगा जो उसे पसंद है अर्थात जिससे पाठक को लगाव/प्यार है। इस प्रकार से पाठक अपनी पसंद की पुस्तक पढ़कर उस विशिष्ट विषय के क्षेत्र में नया विचार, नई सोंच एवं नया मुकाम प्राप्त कर सकेगा। जिससे विशिष्ट विषय के क्षेत्र में एक नया बदलाव देखने को मिलेगा, जो सामाज निर्माण में सहायक एवं राष्ट्र के लिए हितकारी होगा। ऐसा तभी संभव है जब प्रत्येक पुस्तक को प्यार करनेवाला मिलेगा, पुस्तक का अनुकरण एवं पालन करनेवाला मिलेगा तथा उसके विचारों को अपनानेवाला मिलेगाा।

मूल शब्द: प्रत्येक, पुस्तक, प्रेमी

प्रस्तावना

पुस्तकालय विज्ञान के क्षेत्र में यह बात बहुत ही महत्वपूर्ण है क्योंकि यह नई अवधारणाओं, नई विचारों एवं तर्क करने की शक्ति को जन्म देती है। जब पाठक को पुस्तक से लगाव होगा तभी वह पाठक पुस्तक को बारीकी से अध्ययन करेगा, विषय को समझने की कोशिश करेगा, उसके अर्थ एवे महत्व को समझने की कोशिश करेगाा तभी जाकर पाठक को उस पुस्तक के विषय का ज्ञान होगा। जब पाठक अपने ज्ञान का उपयोग करेगा तब उसे उस पुस्तक के विषय वस्तु का अनुभव प्राप्त होगा और तब पाठक उस विषय वस्तु के बारे में अपने अनुभव के आधार पर पुस्तक के विषय वस्तु पर गहराइ से चिंतन.मनन करेगा तब जाकर पाठक के मन में पुस्तक के प्रति नई.नई विचारों एवं नये बदलाव से संबंधित बातों का जन्म होगा। जिस प्रकार एक लड़की को प्यार करने वाला प्रेमी मिल जाता है तो वह प्रेमी हमेशा अपनी प्रेमिका के बारे में सोंचता रहता है, कि कैसे उससे मिलना है, कब मिलना है, कहॉ मिलना है, क्या पहन कर जाउॅ, उसे कौन सा उपहार दूॅ इत्यादि। इस प्रकार उस प्रेमी के दिमाग में अपनी प्रेमिका से मिलने के नये–नये विचार आते रहते है और प्रेमी उसका उपयोग भी करते है। ठीक उसी प्रकार जब पाठक को पुस्तक से प्रेम हो जाएगा और वह पुस्तक प्रेमी बन जाएगा तो वह पाठक भी एक प्रेमी की तरह उस पुस्तक के बारे में ही सोंचेगा, उस पुस्तक को ध्यान से पढ़ेगा, पुस्तक में लिखी गई बातों को समझने की कोशिश करेगा कि उसका क्या अर्थ है, उस पुस्तक कि विषय–वस्तु का क्या अर्थ है, उस पुस्तक का महत्व क्या है, उस पुस्तक का हमारे जीवन में क्या उपयोग इत्यादि और वह पाठक उस प्रिय पुस्तक को बड़े चाव से मन लगाकर पढ़ेगा, जिससे पाठक को उस पुस्तक की जानकारी प्राप्त होगी और साथ ही पाठक को इस बात का भी पता चलेगा कि पुस्तक में लिखित तथ्य का संबंधित विषय–वस्तु क्या है। जब पाठक पुस्तक की विषय–वस्तु को जान जाएगा तब वह पुस्तक में निहित रहस्यों को सुलझाने की भी कोशिश करेगा, पुस्तक के विषय–वस्तु के उपर गहन चिंतन–मनन करेगा ततपश्चात पाठक को विषय का ज्ञान होगा। जब पाठक को ज्ञान प्राप्त हो जाएगा तब वह उसका उपयोग करेगा और अनुभव प्राप्त करेगा और उसी अनुभव के आधार पर विशिष्ट विषय–वस्तु के क्षेत्र में एक नया बदलाव लाएगा जो अन्य पाठकों के लिए लाभकारी एवं उपयोगी साबित होगा। ऐसा बदलाव वही पाठक ला सकता है जो पुस्तक प्रेमी होगा तथा उसे पुस्तक से प्यार एवं लगाव होगा। जब कोइ पाठक अपनी प्रिय पुस्तक पढ़ने लगता है और धीरे–धीरे वह उस पुस्तक के अक्षर रूपी सागर की गहराई में चला जाता है तब पाठक अपनी भूख–प्यास भूलकर उस अक्षर रूपी ज्ञान के सागर में गोता लगाते रहता है तब जाकर उस पाठक को ज्ञान का मोती प्राप्त होता है। अर्थात पाठक को उस पुस्तक के पूर्ण ज्ञान प्राप्त होता है, जिसका वह अपने जीवनकाल में उपयोग करता है।

सच्चा पुस्तक प्रेमी वही होता है जो पुस्तक में लिखी गई बातों को पढ़कर, समझ कर उसका अनुकरण करता है एवं पुस्तक के महत्व, उद्देश्य एवं कार्य को अन्य पाठकों के बीच वर्णन करता है ताकि अन्य पाठक भी पुस्तक प्रेमी बनें, पुस्तक के प्रति लगाव रखे एवं वह भी विशिष्ट विषय–वस्तु का ज्ञाता बन सके।

श्पाठ्य-सामग्रीयों के प्रति लगाव रखना, उसकी सुरक्षा एवं रख-रखाव का ध्यान रखना, पुस्तक के विषय-वस्तु के बारे में चिंतन-मनन करना और यह सुनिश्चित करना कि पुस्तक ही मानव के कल्याण का मार्ग है।"

" पुस्तकों को पढ़ना, सतझना, पुस्तक के रहस्यों को जानना, नये-नये विचारों एवं तथ्यों का अवलोकन करना, उसे अपनाना और ज्ञान प्राप्त करना ही पाठक का प्रथम उद्देश्य होना चाहिए।"

पुस्तक के प्रति लगाव होना एवं पुस्तक प्रेमी होना ही पाठक को ज्ञानवान बनाता है क्योंकि जब पाठक का पुस्तक के प्रति प्रेम बढ़ता है तब पाठक पुस्तक को बारीकी से अध्ययन करता है, तथ्यों को समझता है और ज्ञान प्राप्त करता है।

पुस्तक को प्रारूप के माध्यम से और भी बेहतर ढ़ंग से समझा जा सकता है:–

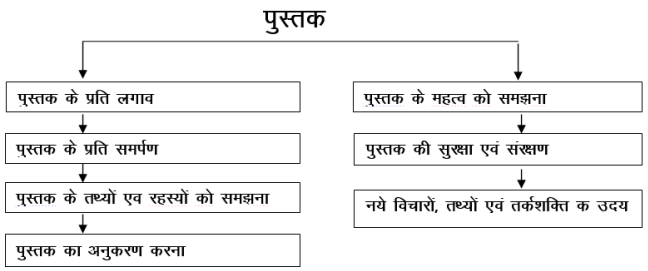

1 पुस्तक के प्रति लगाव

पुस्तक के प्रति लगाव यह बात को दर्शाता है कि पाठक विशिष्ट विषय-वस्तु से काफी जुड़ा हुआ है और साथ ही साथ पाठक अपनी पसंदीदा विषय की पुस्तक के प्रति क्रियाशील है। जब किसी पाठक को उसका प्रिय पुस्तक से भेंट हो जाता है तब वह पाठक काफी प्रशन्न होता है और मन लगाकर उस पुस्तक के अध्ययन कार्य में लग जाता है। पाठक पुस्तक पढ़ने में इतना लीन हो जाता है उसे भूख-प्यास एवं समय का ख्याल ही नही रहता है और यही बात यह प्रमाणित करता है कि पाठक का पुस्तक के प्रति कितना प्रेम है। अज्ञात जी का यह विचार यहॉ चरितार्थ होता मालूम पड़ रहा है–

" अच्छी पुस्तकों से प्रेम करना सीखिए।
पुस्तकों में वह खजाना है जिसे दुनिया का सारा धन मिलकर भी नही खरीद सकता,
लेकिन जिसे सबसे गरीब मजदूर भी बिना कुछ दिए पा सकता है। "

2 पुस्तक के प्रति समर्पण

जब पाठक अपने आप को अपनी प्रिय पुस्तक को समर्पित कर देता है, पाठक पूरी तरह से पुस्तक पढ़ने में मग्न हो जाता है तब जाकर पाठक को पुस्तक के अन्दर निहित ज्ञान की प्राप्ति होती है, वह पुस्तक के विषय-वस्तु, अर्थ एवं रहस्य को समझ जाते है जो कि पाठक को विशिष्ट विषय-वस्तु का ज्ञानी बना देता है। इसलिए तो कहा गया है कि–

" किसी को समझना हो तो उसकी शेल्फ में लगी किताबों को देख लेना चाहिए,
किसी की आत्मा समझनी हो तो उन किताबों में लगी अंडरलाइन को पढ़ना चाहिए। "

3 पुस्तक के तथ्यों एवं रहस्यों को समझना

एक पाठक के लिए यह भी जरूरी है कि वह न सिर्फ पुस्तक को पढ़े बल्कि पुस्तक में लिखे गये शब्दों एवं वाक्यों के अर्थ एवं रहस्य को भी समझे ततपश्चात ही पाठक पुस्तक की पूरी जानकारी प्राप्त कर सकेगा। इसलिए तो कहा गया है कि

" अच्छी किताबें और अच्छे लोग तुरंत समझ में नही आते, उन्हें पढ़ना पड़ता है।

अर्थात् सिर्फ पढ़ना ही काफी नही है, पुस्तक को पढ़ते.पढ़ते उसे समझना भी चाहिए। क्योंकि पुस्तक जब तक समझ में नही आती तब तक पाठक पुस्तक को पढ़ते रहें और यह प्रक्रिया तब तक जारी रखें जब तक कि पुस्तक को अच्छी तरह से समझ नही जाते।

4 पुस्तक का अनुकरण करना

पुस्तक का अनुकरण पाठक को अवश्य करना चाहिए क्योंकि पुस्तक का अनुकरण करने से पाठक के अंदर ज्ञान का प्रकाश फैलता है, उनकी सोंचने एवं समझने की शक्ति का विकास होता है तथा उनका अंतःकरण उज्ज्वल हो जाता है जिस कारण वह पाठक सामाज में अपना एक अलग पहचान बना लेता है। लोगों को उनकी बातें सुनना एवं उनसे बातें करन अच्छा लगता है। इसलिए तो कहा गया है कि

" पुस्तक में होती है नई खोज ,
पुस्तक से मिलती है नई सोंच।"

वास्तव में पुस्तकों में नई खोज एवं ज्ञान का भंडार छुपा होता है बस उसे पढ़कर, समझकर एवं उसका पालनकर पाठक उस ज्ञान को प्राप्त कर लेते है।

5 पुस्तक के महत्व को समझना

पत्येक पुस्तक का अपना अलग.अलग महत्व होता है, लेकिन पाठक पुस्तक के महत्व को समझ पाता है या नही! अगर पाठक पुस्तक के महत्व को नही समझता है तो पुस्तक महत्वपूर्ण होते हुए भी पाठक के काम नही आ सकता। इसलिए तो कहा गया है कि–

" पुस्तकों का मूल्य रत्नों से भी अधिक हैए क्योंकि पुस्तकें अन्तःकरण को उज्ज्वल करती हैं।"

इसलिए जरूरी है कि पाठक पुस्तक के महत्व को हरसंभव समझने की कोशिश करें ताकि वो पुस्तक का उपयोग कर सके। पाठक पुस्तक के महत्व को तभी समझ सकता है जब वो पुस्तक में लिखित शब्दों एवं वाक्यों को ध्यान से पढ़ें एवं उस पर विचार. विमर्श करें।

6 पुस्तक की सुरक्षा एवं संरक्षण

पाठक का पुस्तक के प्रति प्रेम ही पुस्तक की सुरक्षा की गारंटी होती है क्योंकि कोई भी पाठक यह नही चाहता कि उसकी प्रिय पुस्तक का किसी भी तरह का नुकसान हो। पाठक को यथासंभव पुस्तक की सुरक्षा एवं संरक्षण का ध्यान रखना चाहिए ताकि पुस्तक का उपयोग अन्य पाठक भी कर सके एवं आनेवाली पीढ़ी के लिए पुस्तक पूरी तरह से सुरक्षित रहे ताकि वो भी पुस्तक का उपयोग कर सके। पाठक को इस बात का भी स्मरण रखना चाहिए कि अगर पुस्तक फट गई या चोरी हो गई तो नुकसान पाठक का भी होगा क्योंकि फिर से उसे उसकी पसंदीदा पुस्तक पढ़ने को नही मिलेगी जब तक या तो पुस्तक की मरम्मत नही हो जाती या फिर वही पुस्तक पनः खरीदी नही जाती।

7 नये विचारों, तथ्यों एवं तर्कशक्ति क उदय

जब पाठक पुस्तक की गहनता से अध्ययन करता है, पुस्तक के विषय-वस्तु को समझता है, पुस्तक की तथ्यों पर ध्यान केंद्रित कर उस पर चिंतन–मनन करता है, पुस्तक के गुढ़ रहस्यों को समझने लगता है ततपश्चात् पाठक को पुस्तक का ज्ञान प्राप्त होता है। इसलिए तो कहा गया है कि–

" पुस्तकें पढ़ने के साथ विषय को समझना अधिक आवश्यक है क्योंकि ईंसान समझने से विद्वान बनता है समझना ही शिक्षा का अर्थ है
पढ़ने में कुछ समय लगता है परंतु समझने में जीवन व्यतीत हो जाता है।"

" पुस्तक पढ़ने से जानकारीयों की प्राप्ति, अर्थ समझने से शिक्षा की प्राप्ति, विषय का मंथन करने से ज्ञान की प्राप्ति तथा उपयोग करने से अनुभव की प्राप्त होती है। "

अर्थात् जब पाठक अनुभवी हो जाता है तब उसके दिमाग में अनेकों प्रकार के विचार आते–जाते रहते है, नये–नये कल्पनाओं का उदय होता है, तर्क करने की क्षमता बढ़ जाती है जो पाठक को एक नई मुकाम पर पहुँचा देता है।

निष्कर्ष

वर्तमान समय में पुस्तक को पाठक की नही बल्कि पुस्तक प्रेमी की आवश्यकता है क्योंकि जो पुस्तक प्रेमी होगा वही पुस्तक को गहराई से अध्ययन करेगा, समझेगा, विद्वान बनेगा और आगे चलकर नई.नई रचना करेगा, नया आविष्कार करेगा एवं एक नया इतिहास रचेगा।

प्रत्येक पुस्तक को उसका प्रेमी मिले

इस तर्क से यह बात पूर्णतः स्पष्ट होती है कि जब पुस्तक के विशिष्ट विषय–वस्तु के महत्व को समझने वाला पाठक मिलेगा जो पुस्तक के उद्देश्यों एवं विशेषताओं को समझेगा, बारीकी से अध्ययन करेगा, पुस्तक के विषय–वस्तु के बारे में सोंचेगा–विचारेगा तब जाकर उस पाठक के मन में नई.नई कल्पनाएं जन्म लेगी और पाठक अपनी कल्पनाओं से दुनिया को अवगत कराएगा तब उस विषय–वस्तु के क्षेत्र में एक क्रांति आएगी, नया बदलाव देखने को मिलेगा जो सामाज एवं देश के लिए लाभकारी होगा।

संदर्भ सूची

1. https://www.gyanidunia.com
2. https://www.amazingandcurious.com
3. https://www.jeevankasatya.com
4. https://www.gyanipandit.com
5. https://www.jivansutra.com
6. https://www.yourquote.in/tags/quotes